विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४८, कार्तिक पूर्णिमा, २६ नवंबर, २००४ वर्ष ३४ अंक ६

धम्मवाणी

गारवो च निवातो च, सन्तुट्ठि च कतञ्ञुता।
कालेन धम्मस्सवनं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥

सुत्तनिपात २६८, मङ्गलसुत्त.

गौरव करना, नम्र होना, सन्तुष्ट रहना, कृतज्ञ होना और उचित समय पर धर्म-श्रवण करना – यह उत्तम मङ्गल है।

बर्मा ऋणमुक्त हुआ, विपश्यना घर लौटी

('म्यंमा द्वार' के उद्घाटन पर पू. गुरुजी का सार्वजनिक प्रवचन)

अक्तूबर २७, २००४

धर्मप्रेमी सज्जनो-सन्नारियों!

मेरे लिए आज अत्यंत प्रसन्नता का समय है कि मैं अपनी माँ की गोद में बैठ करके धर्म देशना दे रहा हूं। ब्रह्मदेश मेरी जन्मभूमि है और यह ब्रह्मदेश का द्वार इसका प्रतीक है। इस द्वार की छत्र-छाया में बैठकर धर्मचर्चा करते हुए मन उल्लास से भर उठता है। मेरा सौभाग्य है कि मैं ब्रह्मदेश की धरती पर जन्मा– वह है मेरी जन्मभूमि। लेकिन साथ-साथ यह भी मेरा सौभाग्य है कि भारत की भूमि भी मेरी जन्मभूमि है।

बात अजीब लगेगी –दो देशों की भूमि कैसे मेरी जन्मभूमि हो सकती है? लेकिन यह ऐतिहासिक सत्य है। आज के ८१ वर्ष पहले जब मेरा जन्म हुआ तो ब्रह्मदेश भारत का ही एक अंग था। तब वह भारत ही था। तो भारत की भूमि पर भी जन्म हुआ, बर्मा (म्यंमा) की भूमि पर भी जन्म हुआ। मैं बहुत भाग्यशाली हूं, सचमुच बहुत भाग्यशाली हूं।

वैसे तो बाप-दादा व्यापार-धंधे के लिए ब्रह्मदेश में गये। पर मेरा बड़ा सौभाग्य हुआ कि मैंने उस देश में अनमोल धर्मरत्न कमाया। धन-दौलत तो कहीं भी कमा सकते थे, लेकिन यह अनमोल धर्मरत्न विश्व की केवल उस एक धरती पर बचा रहा था। बाकी सारे विश्व में समाप्त हो गया था। भारत की भूमि जहां बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया, भारत की भूमि जहां पर धर्म जागा; ५००-७०० वर्ष बीतते-बीतते ऐसी एक आंधी चली, ऐसा एक तूफान आया, ऐसा एक दुर्भाग्य का समय आया कि सारी की सारी बुद्धवाणी भारत से लुप्त हो गयी। १५,००० पृष्ठों की उनकी अपनी मूल वाणी और ३५,००० पृष्ठों की अर्थकथाएं, टीकाएं, अनुटीकाएं –अपने इस विशाल देश में उसका एक भी पृष्ठ नहीं बचा। बाहर देशों में यह विद्या गयी तो केवल पांच देशों ने भगवान की मूल वाणी संभालकर रखी – लंका, बर्मा, थाईलैंड, कम्बोडिया और लाओस ने। भगवान की मूल वाणी केवल इन पांच देशों में बची रही। यह तो वाणी की बात हुई। पर भगवान की सबसे बड़ी देन तो विपश्यना साधना थी। सैद्धांतिक स्तर पर धर्म को कितना ही समझ लें, जब तक व्यवहार में नहीं उतरे तब तक उसका पूरा लाभ नहीं मिलता। वाणी इतनी मधुर है, इतनी कल्याणकारिणी है कि उसे पढ़ कर, सुन करके भी लोगों में प्रसन्नता और प्रेरणा जागती है। लेकिन जब उसका अभ्यास करें –और अभ्यास विपश्यना द्वारा होता है तब तो जैसे अमृत मिल गया। यह विपश्यना विद्या केवल बर्मा में कायम रही, बाकी कहीं नहीं; सारे विश्व में समाप्त हो गयी। भारत की तो यह अवस्था हुई, दुर्भाग्य की बात हुई कि यहां लोग यह शब्द ही भूल गये। विपश्यना शब्द ही लुप्त हो गया। विद्या की तो बात ही अलग, प्रैक्टिस का तो नामोनिशान नहीं रह गया।

मैं बहुत कट्टर सनातनी घर में जन्मा। बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति बहुत श्रद्धा थी। क्योंकि मैं एक गलत मान्यता को माने जा रहा था, सारा परिवार मान रहा था कि भगवान बुद्ध विष्णु के अवतार हैं; अतः पूज्य हैं। इसलिए उनके मंदिर में जाकर के नमन करना, वंदन करना, फूल चढ़ाना इत्यादि सब करते थे। पर उन्होंने क्या सिखाया, इसका जरा भी ज्ञान नहीं। क्योंकि एक ऐसी मिथ्या भ्रांति फैली भारत में भी, और भारतीय जहां-जहां गये, उन सबके मन में भी कि बुद्ध की शिक्षा हमारे काम की नहीं है। बुद्ध हमारे पूज्य हैं, पर उनकी शिक्षा हमारे काम की नहीं। ३१ वर्ष की उम्र तक मैंने बुद्धवाणी के दो शब्द भी नहीं सुने, नहीं पढ़े। ऐसे देश में जन्मा जहां के ९० प्रतिशत लोग बुद्ध के अनुयायी हैं परंतु मैंने उपदेश के दो शब्द भी नहीं सुने। उनकी वाणी का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ा।

लेकिन भाग्य जागा। कोई ऐसी परिस्थिति आयी कि दस दिन के विपश्यना शिविर में शामिल हुआ। बहुत घबराते हुए – यह तो बौद्धों का है! यह तो बौद्धों की साधना है और मैं कहीं इसमें उलझ गया, इनकी साधना में पड़ कर बौद्ध बन गया तो, अरे बाबा! नरक जाना पड़ेगा। नहीं, यह साधना हमारे काम की नहीं है। हमारे काम की नहीं है।

लेकिन मेरा सौभाग्य था। ऐसी परिस्थिति पैदा हुई। एक ऐसा भयंकर रोग लगा जिसका इलाज बर्मा के डॉक्टर तो कर ही नहीं सके, दुनिया के बड़े-बड़े डॉक्टर –स्विटजरलैंड, जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरिका, जापान –वहां के टॉपमोस्ट डॉक्टर्स सभी इलाज करके थक गये, कोई इलाज नहीं! मायग्रेन का अटैक आये, स्पेशल टाइप मायग्रेन का अटैक आये और केवल मोर्फिया के इंजेक्शन दिये जांय। और कोई इलाज नहीं। डॉक्टर घबराने लगे –अब तो तुमको मायग्रेन के लिए मोर्फिया लेनी पड़ती है, अफीम की सूई लेनी पड़ती है। आगे जाकर ऐसा होगा कि अफीम के लिए अफीम की सूई लेनी पड़ेगी। अफीमची हो जाओगे! बहुत जी घबराया। पर क्या करूं? दुनिया में कोई मुझे मोर्फिया से नहीं निकाल सका, मायग्रेन से निकालना तो दूर रहा।

हमारे एक मित्र ने जो बर्मा का अटार्नी जनरल था, आगे जाकर के बर्मा के सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टीस हुआ; उसने दबाव दिया कि यह सायकोसोमेटिक रोग है, मन से संबंध रखता है। तू दस दिन के लिए विपश्यना में चला जा। तेरा मानस शांत हो जायगा। निर्विकार हो जायगा तो जो तनाव है, वह निकल जायगा। मैंने भी सोचा, मेरे मन में बहुत विकार थे। बहुत क्रोधी व्यक्ति था, बहुत अहंकारी। ये निकलेंगे तो यह रोग अपने आप ठीक हो जायगा।

उसकी बात तो अच्छी लगी, लेकिन जी घबराया – आखिर है तो बौद्धों का, मैं कहीं उलझ गया तो? ना बाबा, ना! मैं नहीं जाता। **"स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।"** यही बचपन से सीखा – पराये धर्म में नहीं जाना, अपने धर्म में मर भले जाओ। झिझकता रहा, ना करता रहा।

फिर मेरे मित्र ने कहा –एक बार इन गुरुमहाराज से मिल तो लो। गुरुमहाराज भी गृहस्थ। गवर्नमेंट के बड़े ऑफिसर। स्वतंत्र बर्मा के पहले अकाउंटेंट जनरल ऊ बा खिन। मिल तो लो उनसे। मिलने में क्या हर्ज है? मिल कर देखते हैं।

उनके घर पर गया, बातचीत शुरू हुई। इतनी सादगी से रहते हैं! इतने बड़े ऑफिसर हैं, टॉप ऑफिसरों में से एक हैं और इतनी सादगी से! सारे घर में इतनी शांति समायी हुई। बड़ा अच्छा लगा। और फिर उनसे बात शुरू की तो उनको कहा कि मैं अपने मायग्रेन का रोग दूर करने के लिए आया हूं। हमारे मित्र ने, जो आपके भी मित्र हैं, मुझे आपके पास भेजा है।

उन्होंने कहा –मत आना। मैं नहीं लूंगा तुमको। हमारे आश्रम में जगह नहीं तुम्हारे लिए। अरे! यह तुम्हारे भारत देश की इतनी महान आध्यात्मिक विद्या! और इस छोटे-से काम के लिए, अपने सिर-दर्द का रोग दूर करने के लिए तुम इसका इस्तेमाल करोगे! अरे, इतनी ऊंची विद्या, जो जन्म-मरण के दुःखों से छुटकारा दिलाने वाली, भव-संसरण से छुटकारा दिलाने वाली और तू सिर-दर्द के लिए इसका उपयोग करेगा! मत आना, हम नहीं सिखायेंगे।

उनकी बातें सुनकर के लगा, तब तक छोटी उम्र होते हुए भी बर्मा में बहुत प्रसिद्धि मिल गयी थी। बर्मा के भारतीयों के, हिन्दुओं के, वहां के व्यापारियों के, उद्योगपतियों के अनेक संस्थानों का प्रेसिडेंट। और कोई गुरु होता तो बड़ा खुश होता – देखो, यह गोयन्का मेरा चेला हो गया! गोयन्का मेरा शिष्य हो गया! और ये कहते हैं – मत आना। कितने निस्संग हैं, कितने निष्स्रिह हैं!

फिर उन्होंने कहा –ऊंचे अध्यात्म के लिए आना हो तो आ जाना, अन्यथा नहीं। इस पर मुझे झिझकते देखा तो पूछा कि तुमको अध्यात्म के लिए आने में क्या कठिनाई है?

मैंने कहा –सयाजी! मैंने बचपन से सुना है कि भगवान बुद्ध की वाणी हमारे लायक नहीं है। यह तो साधु-संन्यासियों के लिए है, भिक्षुओं के लिए है; मैं तो गृहस्थ हूं और मैं भिक्षु बनना नहीं चाहता। एक तो यह। और एक हमें बताया गया कि यह नास्तिक धर्म है। इस रास्ते पड़ जाओगे तो नरक में जाना होगा।

तो बहुत हंसे और कहा कि यह झूठा प्रचार है तुम्हारे देश का। यह गृहस्थों के लिए बहुत आवश्यक है। देखो, मैं भी गृहस्थ हूं। और फिर मुझसे पूछा – तुम यहां के हिंदुओं के लीडर हो? हिन्दुओं के लीडर हो तो हमें एक बात बताओ –तुम्हारे हिन्दुओं में शील-सदाचार पालन करने का कोई विरोध है?

शील-सदाचार का कौन विरोध करेगा भला? हमारे हिन्दुओं में क्या, किसी भी संप्रदाय में शील का विरोध नहीं है। सभी कहते हैं सदाचार का पालन करो, सदाचार का पालन करो। सयाजी! हमारे यहां शील-सदाचार का कोई विरोध नहीं है।

अरे, पर तू सदाचार का पालन कैसे करेगा रे! तेरा मन ही वश में नहीं हो तो कैसे करेगा? हम दस दिन तक सदाचार का पालन करना सिखायेंगे और इसके साथ-साथ मन को वश में करना सिखायेंगे। मन का मालिक बनना होगा, मन का गुलाम नहीं। तभी तुम सदाचार का पालन कर पाओगे। और मन को वश में करने की विद्या को हम समाधि कहते हैं। तुम्हें कोई ऐतराज है? तुम्हारे हिन्दुओं को ऐतराज है समाधि में?

समाधि! शास्त्रों की बहुत किताबें भी पढ़ी थी। अमुक मुनि जंगल में गया, समाधि लगायी। अमुक ऋषि जंगल में गया, समाधि लगायी। अरे, हम गृहस्थ हैं, कोई हमको समाधि लगाना सिखाये तो इसमें क्या विरोध होता भला? नहीं सयाजी! समाधि का हमारे यहां कोई विरोध नहीं है।

उन्होंने कहा, कुछ नहीं मिलेगा समाधि से। समाधि से ऊपर-ऊपर का चित्त निर्मल हो जायगा, अंतर्मन की गहराईयों में, मन की जड़ों में जो विकार हैं, वैसे के वैसे कायम रहेंगे। एक बार तो यूं लगेगा – बहुत ठीक हो गया, हमारा मन एकाग्र हो गया, निर्मल हो गया; और क्या चाहिए? लेकिन कौन जाने कब भीतर से कोई तूफान उठेगा, कोई ज्वालामुखी फूटेगी; फिर वैसे के वैसे हो जाओगे।

उनकी बात सुनी तो मुझे विश्वामित्र की याद आयी, दुर्वासा की याद आयी –अरे, इतनी समाधि लगाने वाले! सचमुच कुछ उभरा उनके अंदर। तब क्या हुआ?

सयाजी ने कहा –जब तक जड़ों से विकार नहीं निकल जाते हैं, जड़ों तक स्वभाव नहीं बदल जाता है, तब तक केवल समाधि काम नहीं आती। हम मन को गहराई तक ले जाकर के वहां जो विकार उत्पन्न होते हैं, उधर उसका स्वभाव बदलेंगे। और उसको हम कहते हैं – प्रज्ञा। इसका कोई विरोध है?

प्रज्ञा! मैं गीता का पाठ करनेवाला, गीता का प्रचार करनेवाला। जगह-जगह प्रवचन देता था उन दिनों गीता पर। और गीता में मेरा सबसे प्रिय विषय स्थितप्रज्ञता का। **"स्थितप्रज्ञस्य का भाषा"** – स्थितप्रज्ञ कैसा होता है? कैसा होता है – **"वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनि उच्यते"**। सब लोगों को यही समझाता था। और ये मुझे प्रज्ञा सिखायेंगे! भला क्या विरोध है इसमें? और कहते हैं प्रज्ञा में पक्का करेंगे तुम्हें। प्रज्ञा में पक्का करेंगे तो कोई विरोध नहीं।

बस, शील, समाधि और प्रज्ञा; इसको छोड़कर हम कुछ नहीं सिखाते। अरे हम ही नहीं, भगवान बुद्ध ने कुछ नहीं सिखाया। उनके नाम पर न जाने कितना बड़ा दुष्प्रचार हुआ तुम्हारे देश में। न जाने कितनी गलत बातें, बेबुनियाद बातें फैलायी गयीं। इन तीन बातों को छोड़कर के उसने कुछ नहीं सिखाया। और ये तीन बातें ऐसी हैं जिनको सब स्वीकार करते हैं। तुमको करके देखना हो तो दस दिन के लिए आ जाओ।

तब मन में आया – भाई! अगर हमारे मन के विकार निकल सकते हैं तो क्या कहने? मैं इतना गुस्सैल आदमी! न जाने अपने बच्चों को कितना पीटा होगा, फिजूल बातों पर। और इतना अहंकारी आदमी! जहां चेम्बर की इलेक्शन हो और मुझे प्रेसिडेंट नहीं बनाया गया तो तहलका मचा दूं। किसी संस्था में कोई इलेक्शन है तो मुझे नहीं चुना गया? मैं ही सबसे प्रमुख हूं। इतना अहंकारी आदमी! जानता हूं इससे दुखी रहता हूं। डॉक्टरों ने कहा –इसी की वजह से तुम्हें मायग्रेन आता है। अगर ये विकार निकल लेंगे तो इसमें क्या विरोध है? चलो ट्रायल करके देख लेते हैं। देखें तो। इसके सिवाय कुछ और सिखायेंगे तो मैं नहीं स्वीकार करूंगा। इतना ही सिखायेंगे तो स्वीकार करूंगा।

मेरा भाग्य जागा, दस दिन के लिए चला गया। और जैसे-जैसे दिन बीतते गये, बहुत अध्ययन किया था अपने हिन्दू धर्म शास्त्रों का। यहां तो सारी धर्म ही धर्म की बातें हैं। दूसरी कोई बात ही नहीं है।

पहले तो प्रज्ञा पर केवल प्रवचन देता था। यही नहीं जानता था कि प्रज्ञा कहते किसे हैं। भगवान बुद्ध ने समझाया –प्रज्ञा किसे कहते हैं? प्रत्यक्ष ज्ञान, अपना ज्ञान। किसी और के ज्ञान पर हम चर्चा करें, बहुत बुद्धिविलास करें, वाणी-विलास करें; हमारा अपना ज्ञान नहीं न! रसगुल्ला मीठा है, बहुत मीठा है, बहुत मीठा है। क्योंकि उसने खाया, वह कहता है मीठा है। तूने तो नहीं खाया न! तू क्या जाने मीठा है कि नहीं है। ज्ञान जब प्रत्यक्ष है तब तुम्हारा ज्ञान है, परोक्ष है तो तुम्हारा नहीं है। केवल श्रद्धा से माने जा रहे हो। प्रत्यक्ष ज्ञान ही तुम्हें ज्ञानी बनायेगा, तुम्हारे विकारों को दूर करेगा। यह बात समझ में आयी। और चौथा दिन होते-होते तो हर कदम, हर कदम प्रज्ञा जगाने वाला। हर कदम प्रज्ञा में स्थित करने वाला। दस दिन बीतते-बीतते तो कहां मायग्रेन गयी? कहां मोरफिया गयी? नामोनिशान नहीं रह गया उसका! और दस ही दिन में सारे विकार निकल गये, ऐसा कहना झूठ होगा। लेकिन दस दिन में जो बदलाव आने लगा, विकार कम होते-होते-होते जीवन बदल गया। जीवन का ढांचा बदल गया।

पहले तो सोचा कि इन्होंने मुझ पर कोई मैजिक किया होगा कि मुझको यह लाभ हो गया। अतः औरों को भी करके देखना चाहिए। घरवाले कोई तैयार नहीं होते –बौद्ध धर्म है! बौद्ध धर्म है, नास्तिक धर्म है! हमारे मित्रों से कहा। कुछ हमारे अच्छे मित्र पढ़े-लिखे थे, हमने कहा –ट्रायल करके देखो भाई। हमको अच्छा लगा, तुम भी करके देखो। दो गये, चार गये, १०० गये, २०० गये। जो गया, वही बदलता चला गया। तब बात समझ में आयी –यह विद्या ऐसी है जिसको सब स्वीकार करते हैं। और गुरुजी के यहां देखा –एक मुसलमान उनका प्रमुख शिष्य है। देखा, वहां एक क्रिश्चन पादरी आया है सीखने के लिए। तब और आश्वस्त हुआ। अरे, यह तो सबके लिए है।

सदाचार का पालन करना सबके लिए आवश्यक है। मन को वश में करना, वह भी ऐसे आलंबन से जो आलंबन सबका है। बस, केवल सांस को जानो, सांस को जानो। कोई शब्द नहीं, कोई मंत्र नहीं, कोई मूर्ति नहीं, कोई आकृति नहीं। तो सांस तो सबका है। सांस को कैसे कहेंगे हिन्दू सांस है, कि मुस्लिम सांस है, कि बौद्ध सांस है, कि जैन सांस है। सांस सांस है। फिर आगे जाकर के अपने मन के विकारों को देखो। क्रोध जागा है तो क्या होने लगा? तुम्हारे भीतर क्या हलचल होने लगी क्रोध जागते ही, वासना जागते ही, भय जागते ही, अहंकार जागते ही भीतर क्या होने लगा? उसे देख।

देखते-देखते-देखते दूर होने लगा विकार। कितना ही क्रोध आया हो, देखते-देखते कम होने लगा, कम होने लगा; निकल गया। कितनी ही वासना जागी हो, भय जागा हो, अहंकार जागा हो; देखते-देखते-देखते निकल गया। अरे! इतनी अच्छी विद्या है! और सबके लिए एक जैसी बात है।

क्रोध जागता है तो क्या लेबल लगायेंगे इस पर? अब के हिन्दू क्रोध जागा और यह अब के मुस्लिम क्रोध जागा, कि बौद्ध क्रोध जागा? अरे, क्रोध क्रोध है। और क्रोध की वजह से भीतर जो व्याकुलता आती है –क्या लेबल लगायेंगे? यह हिन्दू व्याकुलता है, कि बौद्ध व्याकुलता है, कि जैन व्याकुलता है? व्याकुलता व्याकुलता है। और विकार निकलने पर जो शांति आती है, भीतर जो सुख मिलता है, जो आनंद मिलता है, क्या लेबल लगायेंगे उसको? हिन्दू कहेंगे, बौद्ध कहेंगे, जैन कहेंगे?

बात समझ में आयी –धर्म सबका होता है। संप्रदाय भिन्न-भिन्न होते हैं, कर्मकांड भिन्न-भिन्न होते हैं, व्रत-उपवास भिन्न-भिन्न होते हैं, तीज-त्यौहार भिन्न-भिन्न होते हैं; धर्म तो एक ही होता है।

अतः जब यह विद्या मिली तो लगा कि अमृत मिल गया। और उसके बाद वहां १४ वर्ष रहते हुए –३१ वर्ष की उम्र में यह विद्या मिली, १४ वर्ष वहां रहते हुए गुरुदेव के चरणों में इस विद्या में और पका। फिर साथ-साथ भगवान की वाणी भी पढ़नी शुरू की। अपने हिन्दू शास्त्र काफी पढ़े थे। गीता व उपनिषद का अध्ययन था ही। पुराणों का भी कुछ-कुछ अध्ययन था। अब बुद्धवाणी का भी अध्ययन किया तो सारी बात समझ में आयी कि प्रमुख तो सदाचार है। और सदाचार का मूल है समाधि –मन को वश में करना। और समाधि का लाभ तब है जब कि प्रज्ञा जाग जाय और विकार निकल जाय, चित्त निर्मल हो जाय, समता में स्थापित हो जाय। बात समझ में आयी, बहुत लाभ हुआ।

हमारे गुरुदेव की एक बहुत बड़ी धर्मकामना थी। बार-बार कहते थे –यह अनमोल रत्न हमें भारत से मिला है और भारत ने इस रत्न को खो दिया है। वहां नहीं है, नाम ही नहीं है। सचमुच, नाम ही नहीं है, क्योंकि मुझे जब कहा गया कि हम तुम्हें 'विपश्यना विद्या' सिखायेंगे! यह 'विपश्यना' क्या होती है? हिन्दी बहुत पढ़ी थी पर यह शब्द तो नया था। घर आकर हिन्दी की डिक्शनरी देखी, विपश्यना शब्द ही नहीं। और उस समय मेरे पास जो संस्कृत की डिक्शनरी थी, उसे देखा, विपश्यना शब्द ही नहीं। अरे, जिस देश ने शब्द ही खो दिया, तो विद्या तो खोनी ही थी।

तभी गुरुदेव कहते थे भारत ने अनमोल रत्न खो दिया। और जब यहां की बातें सुनते-पढ़ते थे –अरे, कैसी ऊंच-नीच की बातें। किसी को अछूत कहते हैं, किसी को ऊंची जात का, किसी को नीची जात का, किसी को इस सम्प्रदाय का, किसी को उस सम्प्रदाय का। इतना दुख फैला हुआ है भारत में। इस पर उनके मन में इतनी मैत्री जागती थी, करुणा जागती थी। यह विद्या भारत जायेगी, भारत का कल्याण हो जायगा। यह भारत की विद्या भारत वापस जानी ही चाहिए। हम पर भारत का बहुत बड़ा ऋण है। हमें यह भारत से मिली है। हम पर भारत का ऋण है। मुझे यह ऋण चुकाना है। मुझे यह ऋण चुकाना है।

यहां आने के लिए बहुत आतुर थे। लेकिन परिस्थितियां ऐसी बनी कि वे नहीं आ सके। परिस्थितियां ऐसी बनी कि मुझको आने के लिए सरकार ने पासपोर्ट दिया, अकेला पासपोर्ट। बर्मी नागरिकों को कोई पासपोर्ट नहीं मिलता था उन दिनों। मैं बर्मी नागरिक, मुझे पासपोर्ट मिला भारत में बसे अपने माता-पिता से मिलने जाने के लिए। गुरुजी प्रसन्न हुए। अब बर्मा को भारत का ऋण चुकाना है और तुम चुकाओगे। तुम चुकाओगे। चुकाता तो मैं रहा हूं, तेरे माध्यम से चुकाया जायगा। धर्म फिर जागेगा भारत में, बड़ा लोक कल्याण होगा।

आया था अपने माता-पिता से मिलने। माता को कोई रोग हो गया था। मैं जानता था विपश्यना करेगी, ठीक हो जायगी। इसीलिए मुझे पासपोर्ट दिया गया कि अपनी माता की सेवा करने के लिए जा रहा हूं। गुरुजी ने कहा कि इस वक्त भारत में इतने समझदार लोगों का जन्म हुआ है कि वे खिंचे हुए चले आयेंगे विपश्यना की ओर और इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे। और केवल स्वीकार ही नहीं करेंगे, वे प्रसार करेंगे विपश्यना का। तुम घबराओ मत, जाओ।

मेरे मन में बड़ी घबराहट थी। यह विद्या तो ऐसी है नहीं कि किसी को बुलाया, मंत्र दिया और कह दिया घर पर जाकर अभ्यास कर। यह तो रेसिडेन्शल कोर्स होता है, दस दिन तक अपने साथ

रखना। कहां रखूंगा? मुझको यहां कोई जानता नहीं, कैसे शिविर लगेगा? कौन व्यवस्था करेगा? और शिविर लगाने, खाने-पीने, रहने का खर्चा कहांसे आयगा? गुरुजी कहतेथे –तू मत चिंता कररे! जो करेगा, धर्म करेगा, तू कौन करने वाला आया?

..... (क्रमशः)

भूल सुधार

जयपुर में पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं

गतांक में भूल से इन कार्यशालाओंका आयोजन "धम्मथली पर" छप गया, जबकि ये जयपुर के निकटकहींअन्यत्र होंगी। सही स्थान कीजानकारीनीचे के संपर्क पते से मिल सकेगी।असुविधा के लिए खेद है। (सं.)

(१) ३से १४-१-२००५ तक केवलविदेशियों के लिए (अंग्रेजी में) और

(२) १६से २७-१-२००५ तक भारतीय और नेपालियों के लिए (हिंदी में)।

जो लोग इनमें भाग लेना चाहते हों वे कृपया निम्न पते पर ३० नवंबर २००४ तक अपने आवेदन-पत्र भेज दें। पूर्व स्वीकृतिप्राप्त लोगों कोही प्रवेश मिलेगा। स्थान बहुत सीमित है।

पता –विपश्यना केंद्र,पो. बा. २०८, जयपुर- ३०२००१, राजस्थान.
ईमेल =dhammjpr@datainfosys.net

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री अनिल मेहता, जयपुर
२. श्रीमती टी. रामलक्ष्मी, हैदराबाद
३. श्री ठकरशी सोलिया, भावनगर
४. श्री पैट्रीक एल्डर, यू. के.
५. श्रीमती पौल मैकविकर, आस्ट्रेलिया

बाल शिविर शिक्षक

१. अरविंद दवे, जेतपुर (काथी)
२. श्रीमती चेतनाबेन मावदिया, राजकोट
३. श्री द्वारकादास लालदिया, अमरेली
४. श्री विरल जानी, राजकोट
५. कु. सनगुएनवांग, थाईलैन्ड

दोहे धर्म के

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥

गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥

यदि गुरुवर मिलते नहीं, बरमा देश सुदेश।
तो धन के जंजाल में, जीवन खोता शेष॥

पथ भूला दिग्भ्रम हुआ, भटक रहा अकुलाय।
धन्य! धन्य! गुरुदेव ने, सतपथ दिया दिखाय॥

बाहर बाहर भटकते, जीवन रहा गँवाय।
धन्य भाग! गुरुवर मिले, सतपथ दिया दिखाय॥

केमिटो इंस्ट्रूमेंट्स (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोन: ०२२-२४९३ ८८९३; फैक्स: ०२२-२४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जय जय जय गुरुदेवजू, जय जय क्रिपा निधान।
किंकर पर किरपा करी, हुयो परम कल्याण॥

इसो चखायो धरम रस, बिसियन रस न लुभाय।
धरम सार दीन्यो इसो, छिलका दिया छुड़ाय॥

धरम दियो कैसो सबळ, पग पग करै सहाय।
भय भैरव सब छूटग्या, निरभय दियो बणाय॥

धन्य! दियो गुरुदेवजू, विपस्सना रो दान।
हिवड़ो तो हरखित हुयो, पुलकित होग्या प्राण॥

धन्यभाग गुरुदेवजू, पकड़ी मेरी बांह।
मुक्ति प्रदायक पथ दियो, धरम स्तूप री छांह॥

गुरुवर री करुणा जगी, हुयो किसो कल्याण।
प्यासै नै इमरत मिल्यो, मिल्यो धरम वरदान॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४८, कार्तिक पूर्णिमा, २६ नवंबर, २००४**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-,विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2003-05

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) २४४०७६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org